साहित्य साधना

डॉ. देवीदास इंगळे गौरव ग्रन्थ

सम्पादक

डॉ. अशोक मर्डे

डॉ. विनोदकुमार वायचळ

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं । सम्पादक एवं प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचार प्रसारित नहीं किया जा सकता ।

पुस्तक : साहित्य साधना (डॉ. देवीदास इंगळे गौरव ग्रन्थ)

सम्पादक : डॉ. अशोक वसंतराव मर्डे
डॉ विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'

आई.एस.बी.एन. : 978-93-91913-00-7

संस्करण : प्रथम, सन् 2021

© : सम्पादक

मूल्य : ₹ 795.00 मात्र

प्रकाशक : अमन प्रकाशन
104-ए /80 सी, रामबाग, कानपुर-208 012 (उ.प्र.)
मो. : 09839218516, 9044344050
फोन : 0512-3590496 (ऑफिस)

शब्द सज्जा : अमन ग्राफिक्स, रामबाग, कानपुर

मुद्रक : आर.बी.ऑफसेट प्रिंटर्स, नौबस्ता, कानपुर

SAHITYA SADHNA (Dr. Devidas Engley Gourav Granth)

Edited by **: Dr. Ashok Vasantraw Marde, Dr. Vinodkumar Vaychal**

Price : Rs. Seven Hundred Ninty Five Only

☙ अनुक्रम ❧

अ.क्र.	आलेख का शीर्षक	पृ.क्र.
01	साहित्य और संदेश *डॉ. ज्ञानराज गायकवाड़ 'राजवंश'*	13–17
02	जीवनी तथा नाट्य साहित्य में छत्रपति शिवाजी *प्रो. डॉ. सुधाकर शेंडगे*	18–21
03	आदिवासियों की मुक्तिगाथा : 'धरती आबा' नाटक *प्रो. डॉ. रणजीत जाधव*	22–30
04	नागार्जुन की कविता में मार्क्सवादी चेतना *प्रो. डॉ. आबासाहेब राठोड़*	31–34
05	डॉ. माधव सोनटक्के की इतिहास दृष्टि *डॉ. मजीद शेख*	35–43
06	21 वीं सदी में कथेतर गद्य साहित्य का बदलता स्वरूप *प्रो. डॉ. ललिता राठोड़*	44–48
07	रांगेय राघवकृत 'कब तक पुकारूँ' उपन्यास में समाजवादी चेतना *प्रो. डॉ. शिवाजी सांगोळे*	49–55
08	किसानी विचारों के कवि नागार्जुन *प्रो. डॉ. सुभाष राठोड़*	56–60
09	'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक का वास्तव *डॉ. बी. एस. बळवंत*	61–62
10	पंत जी : प्रकृति सौंदर्य के महाकवि *प्रो. डॉ. एम. ए. येल्लुरे*	63–67
11	हिन्दी कथा साहित्य मे स्त्री–लेखन *प्रो. डॉ. अपर्णा पाटील*	68–72
12	21वीं सदी का उपन्यास साहित्य *डॉ. सुरेश मुंढे*	73–79
13	प्रेमचंद की कालजयी कहानियों के शीर्षक *डॉ. प्रकाश खुळे*	80–83

इक्कीसवीं सदी में कथेत्तर गद्य साहित्य का बदलता स्वरूप

(आत्मकथाओं के विशेष संदर्भ में)

प्रो. डॉ. ललिता राठोड

इक्कीसवीं सदी उत्तर–आधुनिक विचार विमर्शों की जननी रही है. इसके साथ ही संशय, विखंडन, विरोध, विद्रोह, अनास्था, प्रतिरोध, घुटन, आक्रोश के भावों के प्रकटीकरण के लिए 'साहित्य' साधन के रूप में उपस्थित रहा है। साहित्य की प्रत्येक विधा में आज के मानव की भावनाओं को अभिव्यक्त तो किया, साथ ही साधन के रूप में 'हाशिए' के समाज का एक 'वैचारिक आंदोलन' भी चलाया है। इक्कीसवीं सदी के साहित्य में विभिन्न प्रवृत्तिओं का प्रकटीकरण हुआ है। इसके साथ ही 'एक वैचारिक आंदोलन' के निर्माता के रूप में भी देखा जा सकता है। 'साहित्य' के प्राचीन से लेकर अब तक के इतिहास को देखेंगे, तो यह पता चलता है कि 'काव्य' विधा को अत्यधिक महत्व रहा है। आधुनिक साहित्य में गद्य साहित्य को भी महत्वपूर्ण स्थान मिला, इसके साथ ही कथा साहित्य को जितनी लोकप्रियता मिली, उतनी कथेतर गद्य साहित्य को नहीं। परंतु कथेतर गद्य साहित्य रचना का क्रम बराबर चलता रहा है, जिसको सम्मान एवं प्रतिष्ठा इक्कीसवीं सदी में मिली है।

कथेतर गद्य साहित्य की प्रमुख दस शैलियाँ है – निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, समालोचना, जीवनी, आत्मकथा, पत्र लेखन, साक्षात्कार, समीक्षा आदि। विकिपीडिया के अनुसार, "कथेतर साहित्य (Non-fiction) साहित्य की वह शाखा है जिसमें दर्शाए गए स्थान, व्यक्ति, घटनाएँ और सन्दर्भ पूर्णतः वास्तविकता पर ही आधारित होते हैं। इसके विपरीत कपोलकल्पना है जिसमें कथाएँ कुछ मात्रा में या पूरी तरह लेखक की कल्पना पर आधारित होतीं हैं और उनमें कुछ तत्व वास्तविकता से हटके होते हैं।"[1] दयानिधि मिश्र के अनुसार, "इन कथेतर गद्य–विधाओं को हिंदी के रचना–संसार ने जिस तत्परता, उत्साह और गम्भीरता से अपनाया, इनके प्रयोग और उपयोग के प्रतिमान स्थापित किए और इन गद्य विधाओं ने साहित्यिक ही नहीं, सामाजिक जीवन में भी जिस तरह की वैचारिक हलचलों को जन्म दिया है, उससे जाहिर है, कि आलोचना के सैद्धांतिक